International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(1): 05-07
Received: 09-05-2021
Accepted: 16-06-2021

कुमारी चायना दें
सहायक प्राध्यापिका, डॉ. एस. राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चिकसिया, चास, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
कुमारी चायना दें
सहायक प्राध्यापिका, डॉ. एस. राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चिकसिया, चास, झारखंड, भारत

पारिवारिक वातावरण का किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में योगदान

कुमारी चायना दें

DOI: https://doi.org/10.22271/multi.2022.v4.i1b.134

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन किशोरों की व्यक्तित्व निर्माण पर परिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करता है। हर बच्चे का जन्म उसके परिवार में होता है और उसका संपूर्ण पालन–पोषण उसके परिवार के लोग करते हैं। परिवार के सभी सदस्यों में अभिभावक अर्थात माता–पिता की भूमिका सबसे अहम होती है बच्चों के सर्वांगीण विकास के उनके माता–पिता बच्चों के सभी आवश्यकताओं को समझते हुए उसका पालन पोषण करते हैं। किशोरावस्था जो अपने आप में एकसमस्यायिक काल है जिसमें अभिभावकों द्वारा सभी मार्गदर्शन से ही बच्चों के सही व्यक्तित्व निर्माण में योगदान प्राप्त होता है।

कुटशब्दः झारखंड के किशोरों का व्यक्तित्व निर्माण, पारिवारिक वातावरण, स्वतंत्र चिंतन एवं अभिभावकों का उचित निर्देशन व्यक्तित्व निर्माण।

प्रस्तावना
व्यक्तित्व (चमतेवदंसपजल) आधुनिक मनोविज्ञान का बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रमुख विषय है। व्यक्तित्व के अध्ययन के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार का पूर्वकथन भी किया जा सकता है।
प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेष गुण या विशेषताएं होती है। जो दूसरे व्यक्ति में नहीं होती। इन्हीं गुणों एवं विशेषताओं के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। व्यक्ति के इन गुणों का समुच्चय ही व्यक्ति का व्यक्तित्व कहलाता है। व्यक्तित्व एक स्थिर अवस्था न होकर एक गत्यात्मक समष्टि है। जिस पर परिवेश का प्रभाव पड़ता है और इसी कारण से उसमें बदलाव आ सकता है। व्यक्ति के आचार-विचार, व्यवहार, क्रियाएं और गतिविधियों में व्यक्ति का व्यक्तित्व झलकता है। व्यक्ति का समस्त व्यवहार उसके वातावरण या परिवेश में समायोजन करने के लिए होता है।
जनसाधारण में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्य रूप से लिया जाता है, परन्तु मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के रूप गुणों की समष्ठि से है, अर्थात् व्यक्ति के बाह्य आवरण के गुण और आन्तरिक तत्व, दोनों को माना जाता है।
परिवार हमारे समाज का सर्वोच्चनिधि और इकाई है। लेकिन आधुनिकता और भौतिकता की दौड़ में आज परिवार छोटे और छोटे होते चले जा रहे हैं। आधुनिकता कैसे भी हो लेकिन परिवार का स्थान या जरूरत हर समाज को हमेशा ही रहेगा। परिवार के बिना किसी भी व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है क्योंकि वह परिवार में ही जन्म लेता है उसकी पालन पोषण की संपूर्ण प्रक्रिया इसी परिवार में होता है साथ ही वह अपना संपूर्ण विकास इसी परिवार मे रहकर करता है। दुनिया के हर समाज में परिवार को महत्व दिया गया है। इसका आकार भले कहीं छोटा या कहीं बड़ा रहा हो। परिवार का निर्माण माता-पिता और उनके बच्चों के समूह से बनता है। जिसमें माता पिता की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। जिस प्रकार परिवार को बालकों का प्रथम पाठशाला माना जाता है तो माता को उनकी प्रथम शिक्षिका माना जाता है। परिवार बालक के हर अवस्था को विकसित करने में अपनी अहम भूमिका अदा करती है चाहे वह शैशवावस्था हो, बाल्यावस्था हो किशोरवस्था हो या प्रौढ़ा, हर अवस्था में यह बालक को मनोवैज्ञानिक दशा में अपना योगदान देता है।
परिवार के इसी योगदान से बालक में चौमुखी व्यक्तित्व का निर्माण होता है बालक का व्यक्तित्व उसके आंतरिक और बाहर दोनों गुणों के सममिश्रण से परिलक्षित होता है। जिसमें उसका सममिश्रण व्यवहार, अनुशासन, सहयोग, समायोजन, बौद्धिक क्षमता, भावात्मक क्षमता, आदि सभी गुण आते हैं। पारिवारिक वातावरण जितना ही अच्छा खुशहाल होगा बालक का व्यक्तित्व निर्माण उतना ही उच्च और विकसित होगा इसमें कोई संदेह नहीं है। कुछ बातें ऐसी खास है जो परिवार मे ही पाई जाती है चाहे वह परिवार छोटा हो
या बड़ा अमीर हो या गरीब उसके व्यक्तित्व पर इसका सीधा प्रभाव पड़ता है। बड़े या संयुक्त परिवार में बच्चे को भरपूर प्यार मिलता है और यही स्नेह प्यार बच्चे के अंदर सुरक्षा की भावना को बढ़ाता है। उसके अंदर संसार को देखने जानने की उत्सुकता बढ़ती है। परिवार में बच्चे का एक अलग स्थान होता है जिसमें हर व्यक्ति उसका खास ख्याल रखता है। अर्थात जैसा व्यवहार, भाव को वह

प्राप्त करता है उसमें भी उसी प्रकार की भावनाओंकेव्यक्तित्व का निर्माण होता है। बालक अपने परिवार में रहकर ही अच्छे बुरे की पहचान करना लोगों की मदद करना समूह मे रहकर, कार्य करना, न्याय के लिए लड़ना, एक दूसरे के प्रति सेवा, भाव, सहयोग भाव आदि को सीखता है समझता है और जानता है साथ ही वह जैसे-जैसे बड़ा होता है अपने उम्र के साथ अपने उत्तरदायित्व को भी समझने लगता है।बालक में अनुशासन, सरलता, दृढ़ता, बुद्धिमता, समाजिकता , आत्मीयता, रचनात्मक, सृजनात्मक इन सभी गुणों का विकास निर्माण उसके परिवार में रहकर ही होता है। परिवार किसी भी बालक को सीखने या आगे बढ़ने के जो अवसर देता है वह उसे किसी भी जगह नहीं मिल सकते। किसी विद्यालय में एक अध्यापक के साथ बालकों का पूरा समूह होता है।

अतः प्रत्येक बच्चे को या बालक को संपूर्ण रुप से ध्यान देना हर अध्यापक के लिए कठिन कार्य होता है परंतु किसी परिवार के लिए अपने मात्र बच्चे को देखना उतना ही सरल होता है। इसलिए बालक को उसके व्यक्तित्व को विकसित करने में परिवार जैसा अच्छा वातावरण कहीं नहीं मिल सकता। संभवतः परिवार की इन्हीं फायदे को ध्यान में रखते हुए सन 1994 को अंतर्राष्ट्रीय परिवार वर्ष घोषित किया गया था। पारिवारिक संबंध बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास को निर्माण करने में मदद करती है। परिवार का स्वरूप जिस रूप में भी हो अमीर-गरीब, संयुक्त, एकल कोई फर्क नहीं पड़ता किंतु इसका माहौल इसका वातावरण हमेशा ही उच्च एवं खुशहाल होना चाहिए। परिवार के लोगों का सहयोग जितना ही अधिक होगा बालकों के साथ उनका व्यक्तित्व उतना ही ज्यादा विकसित होगा। अतः आज के आधुनिक एवं भौतिक युग में जरूरत है परिवारिक वातावरण की आवश्यकता का उसके भावात्मक जुड़ाव का जिससे किसी भी बालक का व्यक्तित्व विकास सरलता एवं उच्चता से हो सके।

निष्कर्ष

किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक के व्यक्तित्व को सही मायने में दिशा निर्देश मिलता है। जो सफल, जीवन का सूत्रधार होता है और किशोरों को यह दिशा निर्देश और कहीं से नहीं बल्कि अपने परिवारिक वातावरण से ही प्राप्त होता है। अर्थात किसी भी किशोरों के अच्छे व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवार की सहभागिता महत्वपूर्ण होती है। इसलिए किशोरों के उच्च व्यक्तित्व निर्माण के लिए जरूरी है उसका पारिवारिक वातावरण सही रूप में होना। अर्थात माता -पिता का पूर्ण सहयोग होना।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमारी गायत्री (2020), उच्चतर माध्यमिक स्तर के किशोर विधार्थियों पर अभिभावक शैली का उनकी आक्रामकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन, इनोवेशन द रिसर्च कांसेप्ट , ट.5 , च 25.38 प्पछ : 2456.5474ण
2. एम. रानी.लता, (2015). जर्नल ऑफ द इंडियन अकादमी ऑफ एप्लाइड साईकोलीजी 31(2), 18-23ण
3. चावला, एन. अनीता, (2012). द रिलेशनशिप बिटवीन फैमिली एनवायरनमेंट एंड अकादमिक अचीवमेंट, इंडियन ड्रीम रिसर्च बर्नल (12).
4. शर्मा, मनिका. खातून, ताहिरा, (2011) फैमिली वेरिएबल एस अ प्रेडिक्टर ऑफ स्टूडेंट्स अचीवमेंट इन साइंस, जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाईडेंस एंड रिसर्च 28(1), 28-36 ण
5. देवी, एस. मयूरी, के. (2008) द इफेक्ट ऑफ फैमिली एंड स्कूल ऑन द अचीवमेंट ऑफ रेसिडेंटिअल स्कूल चिल्ड्रेन. जर्नल ऑफ कम्युनिटी गाईडेंस एंड रिसर्च 20(2), 139-148 ण
6. दासगुप्ता, मनीषा-सान्याल, नीलांजना, (2008). फैमिली द चीफ कैटेलिस्ट इन प्रोमोटिंग चिल्ड्रेंस इमोशनल वेलब्रिंगो अ रिव्यु.इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी साईकोलीजी 4(1), 48-53 ण
7. जुयाल, एस. एल. गौर, वी. (2007). फैमिली स्ट्रक्चर एंड जेंडर ऐज कोरीलेट्स ऑफ भेरिटेबल एडजस्टमेंट एंड मेंटल हेल्थ ऑफ द मैरिड कपल, बेहवियरल साइंटिस्ट, 8रु 93-100 ण
8. गौर, वी. गुप्ता, एन. (2004). द इफेक्ट ऑफ सेट ऑन पर्सीवड होम एनवायरनमेंट, देव शक्ति, 1रु 41-49 ण
9. शर्मा, एस. निधि. (2002) ए स्टडी ऑफ द इफेक्ट ऑफ पैरेंटल इन्वोल्वेमेंट एंड एस्पिरेशन ऑन अकादमिक ऑफ 2 स्टूडेंट्स, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, पंजाबी यूनिवर्सिटी ण
10. मार्टिन , ए. जे. मार्श, एच. देवस , आर. एल . (2001). सेल्फ-हैंडीकैपिंग एंड डिफेंसिव पेसिमिस्म रु एक्सप्लोरिंग ए मॉडल ऑफ प्रेडिक्टर्स एंड आउटकॉम्स फ्रॉम अ सेल्फ प्रोटेक्शन पर्सपेक्टिव, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साईकोलीजी, 93, 87-102 ण
11. Sharma, S (2017)- Social networking addiction and academic self & concept] P: ISSN NO:- 2455 & 0817 RNI NO- UPBIL/2016/67980 VOL-2 ISSUE-1 Remarking an Analisation .
12. Sharma, S (2018)- Development perspectives on identity its nature and formation, P: ISSN NO:- 2321-290X E: ISSN NO:- 2349-980X RNI: UPBIL/2013/55327 Vol-6 ISSUE-4 (Part-1) Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika.
13. Sharma, S (2019)- Role of education and socio-cultural change of girls of Haryana, P: ISSN NO:- 2321-290X, E; ISSN NO:- 2349-980X RNI: UPBIL/2013/55327 Volume 6 Issue Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika